मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १६५ • अप्रैल-२०२१

श्री नरनारायण भगवान के
१९९ वे पाटोत्सव पर
२०० वे पाटोत्सव
''पर्व'' की घोषणा

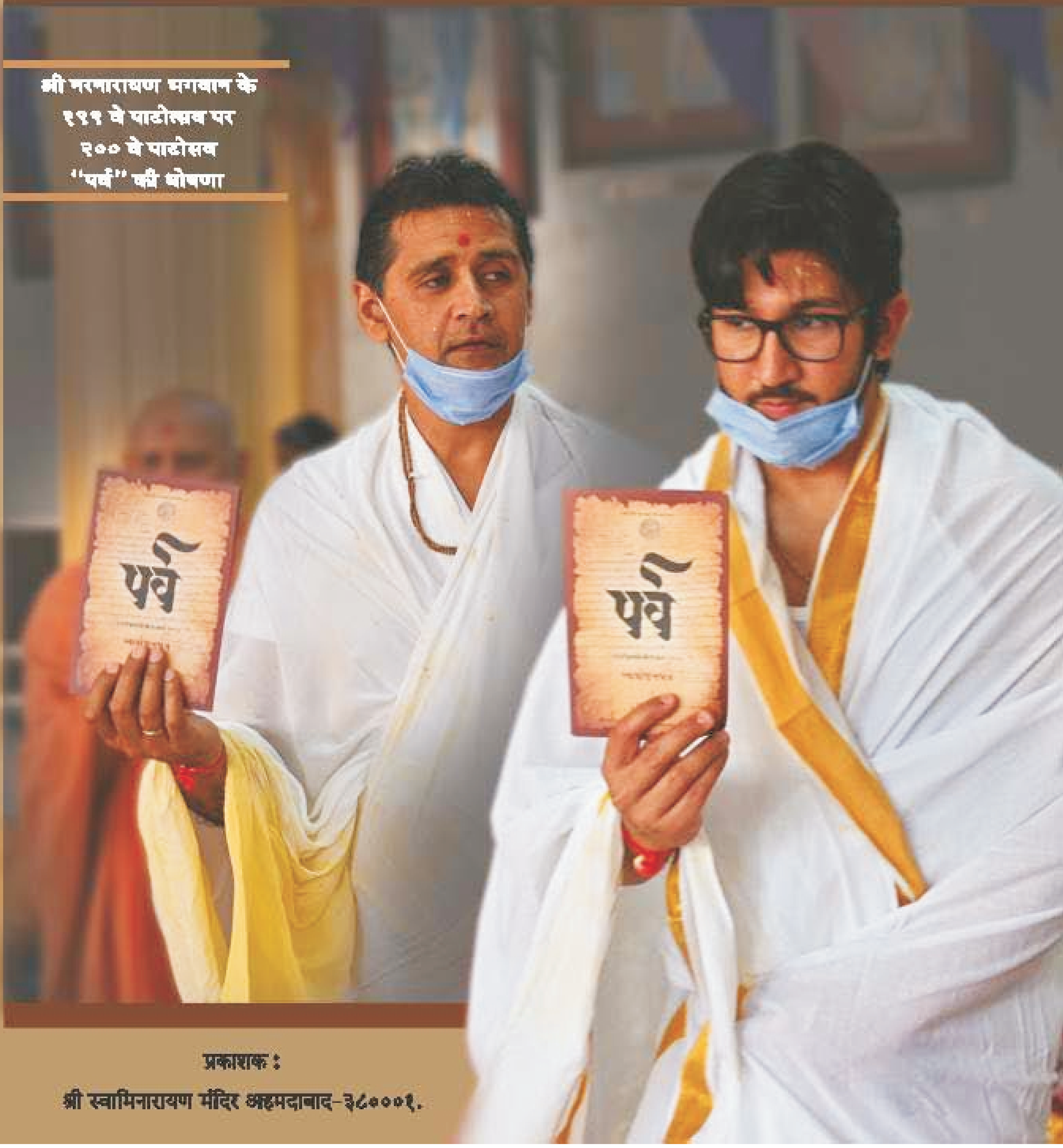

प्रकाशक :
श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

श्री नरनारायणदेव के १९९ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकरजी की आरती उतारते श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप ।

श्री नरनारायणदेव के १९९ वे पाटोत्सव के अवसर पर अभिषेक तथा यजमान परिवार के साथ "पर्व" के साहित्य का विमोचन

मास्क और सोशियल डिस्टन्स का पालन करते हुए। चौक में बडे स्क्रीन पर दर्शन करते अनुशासनबद्ध जनमेदनी

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १४ ● अंक : १६५ ● अप्रैल-२०२१

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	"पर्व"	०६
०४.	प्रसादी का गाँव पेथापुर	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत बचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०७.	भक्ति सुधा	१६
०८.	सत्संग समाचार	१८

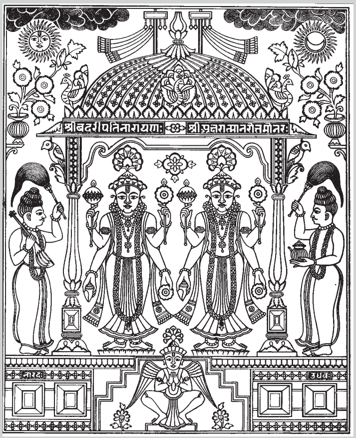

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

श्रीजी महाराजने वचनामृत में कहा है कि जो चार प्रकार की प्रलय को अच्छे तरह से समझ लेता है। उसे संसार की वर्तमान में घटने वाली घटनाओं को सुनकर उसके हृदय में कोई आश्चर्य या भय का अनुभव नही होता है। लेकिन परमेश्वर के अलौकिक लीला का अनुभव होता है। जैसे कि कोरोना महामारी को देखकर दुखी होने के स्थान पर आनंद प्राप्ति का मार्ग खोजकर निर्भय होकर रह सकते है। जैसे की दो हाथ की दूरी और मास्क से क्या ज्ञान लेना चाहिए ? किसी के अति समीप जाना खतरा स्वरुप है । सब कुछ मुख में ग्रहण करना अच्छी बात नही है । यह सब समझकर यदि हम मुख के द्वारा पेट में अच्छे पदार्थ को ग्रहण करे । इससे पेट में कोई कष्ट नही होगा। उसमें भी भगवान श्री स्वामिनारायण ने श्री शिक्षापत्री में वर्णित सदाचार रुपी स्वधर्म का पालन करना आ जाये तो । उसे जीवन में कभी विघ्न नही आयेगा । उसके सभी कार्य सरलता पूर्वक पूर्ण हो जाते है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

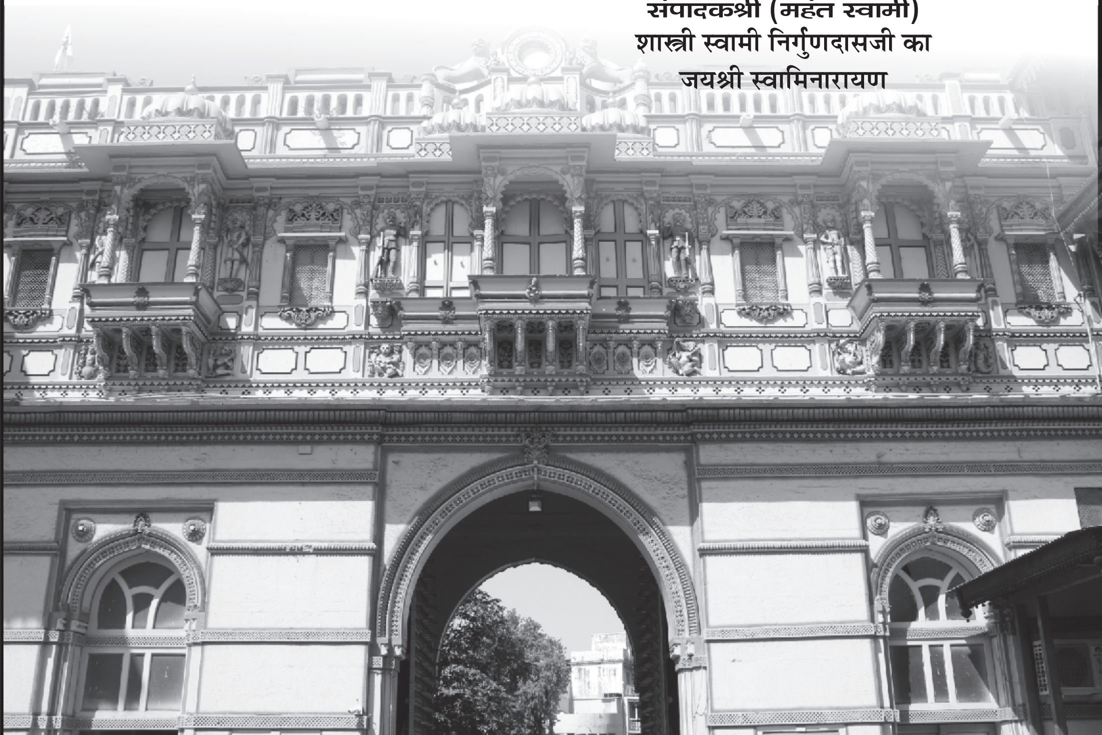

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की
रुपरेखा
(मार्च-२०२१)

१६ अहमदाबाद मंदिर में विरामजान श्री नरनारायण भगवान के १९९ पाटोत्सव के अवसर पर श्री नरनारायण भगवान का अभिषेक तथा प्रसंगोचित सभा में आने वाले वर्ष में २०० वाँ पाटोत्सव ''पर्व'' की रुपरेखा से सभी संतो-हरिभक्तो को परिचित कराये ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा
(मार्च-२०२१)

१६ अहमदाबाद मंदिर में विरामजान श्री नरनारायण भगवान का १९९ पाटोत्सव के अवसर पर श्री नरनारायण भगवान का अभिषेक तथा प्रसंगोचित सभा में उपस्थित रहना ।

विश्व का प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बिराजमान
श्री नरनारायण भगवान के २०० सौ वर्ष

पर्व

२७ फरवरी से
५ मार्च २०२२

भगवान श्री नरनारायण की पादुर्भाव भूमि होने के कारण श्रीजी महराजने अंग्रेजी की विनंती स्वीकार के सम्प्रदाय की आघार शिला मंदिर के रुप में रखे थे । व्यवहार कुशल सद्‌गुरु श्री आनंदानंद स्वामीने श्रीजी महाराज के वचनानुसार संत हरिभक्तो की सेवा-श्रम यज्ञ से दो वर्ष में निर्माण कार्य पूर्ण कर दिये ।

धर्मपिता, भक्तिमाता की तपस्थली और श्री नरनारायण भगवान की जन्म स्थली उसमें श्रीहरिने संवत १८७८ फाल्गुन सुद तीज के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद के सम्प्रदाय के विश्व का प्रथम मंदिर नियंत्रण में लेकर श्री नरनारायण युगल स्वरुप की स्थापना किये । तथा समैया भी किये । ये दोनो स्वरुप आज भी यथा स्थान पर बिराजमान है ।

दो सौ वर्ष के इतिहास में आचार्य परम्परा के नेतृत्व में कोटि-कोटि संत-सत्संगीयोने मंदिर की तन, मन, धन, समय, शक्ति से रक्षण और सेवा दिये है । ऐसे प्रातः स्मरणीय समय-समय के साक्षी ऐसे मंदिर की सभी को कृतज्ञता व्यक्त करने का पर्व आ रहा है । आइये हम सब मिलकर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा आशीर्वाद से भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के नेतृत्व में २०० वर्ष का ''पर्व'' मनायेगे । उसमें सेवा देकर जीवन के यादकार पल को लिखेगे ।

अवतीर्य निजाक्षरात्परादिह मूर्त्यां बदरीवने स्थितः ।
भुविभारतजीवशर्मणे नरनारायणदेव पाहिमाम् ॥

श्री स्वामिनारायण भगवानने सर्व जीव हित के लिये मंदिर, शास्त्र, धर्मकुल का आचार्य पद इन तीन गूढ संकल्प को दिये ।

तत्कालीन ईस्ट इंडिया कम्पनी के पदाधिकारीयो ने ब्रिटिश महारानी के आदेश से जब क सूर्य और चन्द्रमा रहे तब तक अहमदाबाद शहर में विशाल भूभाग ताम्रपत्र पर लिखकर सम्प्रदाय का मुख्य कार्यालय बने ऐसा लेख दे दिया ।

साबरगंगा धर्मारण्य आदि सतयुग में

श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वमुख से कहे गये २७३ वचनामृत में श्री नरनारायण भगवानने कुल ८८ (अठ्यसी) बार याद करके स्वरुप निष्ठा की दृढता का रहस्य समझाया है ।

''पर्व'' के उपलक्ष्य में आयोजन
१६ मार्च २०२१ से ५ मार्च २०२२ तक

१. गाँव-गाँव के मंदिरो में २०० धंटे की धुन
२. गाँव-गाँव में सत्संग सभाये
३ पदयात्रा के द्वारा अहमदाबाद कालुपुर श्री नरनारायण भगवान का दर्शन
४ नित्य नारायणाष्टक गान
५ महामंत्र लेखन
६ जरुरतमंद लोगो की सहायता
७ शास्त्रो - स्त्रोत - मंत्र के पाठ का पुनः उच्चारण
८ कालुपुर मंदिर चेलन में नित्य कथा
९ साप्ताहिक प्रभात फेरी
१० दो लाख वृक्षो को लगाना
११ गाँव-गाँव में स्वच्छता पवित्रता अभियान
१२ घर-घर में स्वच्छता पवित्रता अभियान
१३ गृह उद्योग को प्रोत्साहन
१४ खेल-कूद स्पर्धा और सहयोग
१५ आर्गेनिक कृषि उत्पादन विक्री के अन्तर्गत किसान प्रोत्साहन

तथा अन्य सेवा - सहायता के कार्यक्रम

''पर्व'' में सेवा यजमान
महाविष्णु यज्ञ का पाटला

२,५१,०००/- (ऋगवेद विभाग)
१,५१,०००/- (सामवेद विभाग)
१,००,०००/- (यर्जुवेद विभाग)
५१,०००/- (अथर्ववेद विभाग)

समूह महापूजा

२५,०००/- (प्रथम आवरण)
११,०००/- (द्वितीय आवरण)

संहिता पाठ

१,२५,०००/-

विशेष

- अनेक सेवाओ में यजमान बनने के लिये कालुपुर मंदिर के कोठार में नाम लिखवाये।
- गाँव में सभा के समय मास्क अवश्य पहने, भौतिक दूरी बनाये रखे। पुष्पगुच्छ - सम्मान स्थगित रखे।

श्री नरनारायण भगवान की ध्वजा में साक्षात श्री हनुमानजी बिराजमान है। यह शास्त्रो में वर्णित है कि जो कोई भी व्यक्ति भगवान का दर्शन नही कर पाया हो। वह ध्वजा का दर्शन करे। उसे भगवान के दर्शन तुल्य श्रेष्ठ फल मिलता है। उसी प्रकार मंदिर पर ध्वज फहराने का महत्व है। उसका दिव्य लाभ इस वर्ष निम्नलिखित हरिभक्तोने अपना मनोरथ पूर्ण होने पर किये थे।

ध्वजा चढाने वाले भक्तो की सूची

(१) प.भ. घनश्यामभाई बबाभाई नाथाभाई पटेल - उनावा
(२) श्रीमती हेतलबेन रोहितभाई मुखी परिवार - मोटेरा
(३) प.भ. भाणाभाई हरजीभाई हीराणी - कच्छ-भुज

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

magazine@swaminarayan.in

अहमदाबाद शहर के पास

श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी का गाँव

पेथापुर

– संकलन : प्रफुल खरसाणी

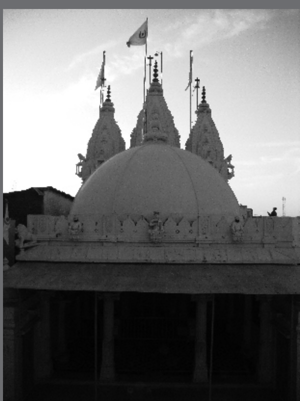

पेथापुर जाने के लिये :

रेल्वे में अहमदाबाद से कलोल होकर रांधेजा से

कार के द्वारा :

कालुपुर मंदिर से ३१.७ कि.मी., एअरपोर्ट से २४ कि.मी. रांधेजा से ५ कि.मी.

श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने भक्तो के मनोरथ को पूरा करने के लिये और मुमुक्षुओ के कल्याण हेतु पूरे गुजरात में भ्रमण किये थे । अहमदाबाद में मंदिर प्रतिष्ठा के बाद अहमदाबाद के पास छोटे से छोटे गाँव में सबसे निम्नस्तर वालो के उद्धार के लिये भ्रमण किये थे । उस में से एक गाँव गांधीनगर जिले में पेथापुर है । पेथापुर गाँव साबरमती नदी के किनारे ऊँचे जगह पर स्थित है । यहाँ का मंदिर तीन शिखरो वाला और उगमणा वाला है । प्रवेश द्वार दक्षिण दिशा में है । मध्य मंदिर में श्री राधाकृष्ण घनश्याम महाराज की तीन मूर्तियाँ प्रस्तापित है । और पास में सुखशैया तथा चित्रपटवाली हरिकी मूर्तियाँ है । यहाँ का सभामंडप स.गु. भूमानंद स्वामीने बनवाया था । पहले यह मंदिर हरिमंदिर के रुप में था । समय बीतने के बाद स.गु. स्वामी अक्षरजीवनदासजीने शिखरबंद्ध किये थे । संवत १९७३ में फाल्गुन सुद तीज के दिन ध.धु. आचार्यश्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री के हाथो द्वारा देवो की प्रतिष्ठा की गई थी ।

यहाँ पर श्रीहरि तीन बार गये थे। उनका स्मारक स्वरुप चौक में छत्री है । यहाँ से गुजरने वाली साबरमती नदी में श्रीहरि ने स्नान किया था । और तट पर स्थित सुखाडिया महादेव का दर्शन किये थे । यह जगह और किनारा प्रसादी का स्थल है । हनुमानजी की मूर्ति भी प्रसादी की है।

यहाँ पर नदी की खाई काफी गहरी है । यहाँ का छापकाम पहले प्रसिद्ध था ।

पेथापुर में श्रीहरि

भगवान श्री स्वामिनारायणने पेथापुर जाकर अधर्म का नाश किये । और पेथापुर गाँव को अपने कमल वत चरणो से पवित्र किये । साथ-साथ ही अपने आश्रित भक्तो का मनोरथ पूर्ण करके अपने धाम को भेजे थे । श्रीहरि के आश्रित पेथापुर के भक्तो के नाम का वर्णन स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने ''भक्त चिंतामणी'' ग्रन्थ के प्रकरण-११९ में किये है।

क्षत्रि भक्त रासाजीवखतो, भजवाहरि कर्यो दृढ मतो ॥१५॥
हरिजन गुलाल सोनार, द्विज दोलि राई भावसरा ॥
एह आदि भक्त बीराजकई, भजे प्रभु पेथापुर राई ॥१६॥

उपरलिखित हरिभक्तोने श्रीहरि की अधिक सेवा करके लाभ लिया । ये लोग निष्काम भाव से सेवा के हमेशा तैयार रहते थे ।और भक्ति करते थे ।

एक समय पेथापुर के जेठाभाई व्यास तीर्थ यात्रा करने निकले । और अहमदाबाद आये । अहमदाबाद में रामनवमी का समैया करके वडोदरा, सुरत, भरुच, और खम्भात होकर वडताल आये थे ।

मंदिर में ठाकुरजी तथा संतो का दर्शन किये । तथा तीर्थयात्रा में अकेल ही जा रहे हे । यह बात संतो को बताये । संतो ने कहा गर्मी में हैजा रोग अधिक हो रहा है । इस लिये आप घर वापस जाइये । लेकिन वे तो पंचतीर्थ करने का विचार करके निकले थे । इस लिये उदास होकर शयन करने चले गये । उसी समय श्रीजी महाराज वहाँ दर्शन देकर बोले हम एक संत स्वरुप में रघुवीर महाराज के अहमदाबाद जा रहे है । उनके साथ आप जाये सुख से पंच तीर्थ करे । ऐसा श्रीजी महाराजने कहा-सुख से पंच तीर्थ करके घर गये । इस प्रकार महाराजने अपने आश्रित को निर्विध्न यात्रा कराये थे ।

पेथापुर गाँव में वरसो खेर श्रीजी महाराज के पास भक्त थे । सत्संगी थे तथा अन्य लोगो को सत्संग के लिये प्रेरित करते थे । वृद्ध हो जाने के बाद उनकी सेवा उनकी पुत्री ने किया । वरसाखेर के मन में ऐसा आया कि हमारे पास पुत्र नही है । इस लिये उनका जन्म पुत्री के यहाँ पुत्र के रुप में हुआ । कुछ दिन के बाद किसी हरिभक्त को दर्शन देकर बोले । वरसाखेर के यहाँ पुत्री को पुत्र पैदा हुआ है । महाराजने उनका कल्याण किया था ।

इस प्रकार भगवान स्वामिनारायण अपने संत-पार्षद सहित पेथापुर आते थे । और अपने धाम का अवर्णनीय सुख प्रदान करते थे ।

अहमदाबाद के अगल-बगल के अन्य गाँवो के बारे में बाद में बतायेगे । अपने गाँव की विवरण और फोटो भेजेगे तो उसको अवश्य समावेश किया जायेगा ।

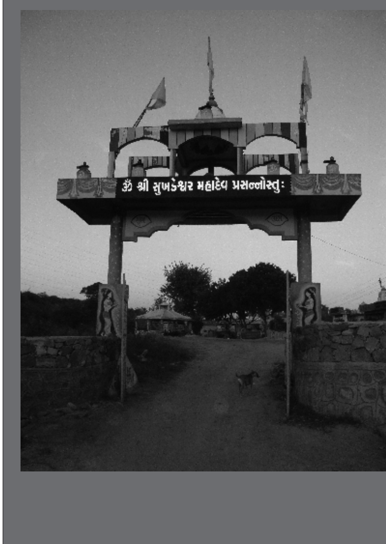

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत बचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री नरनारायणदेव के १९९ वे पाटोत्सव के अवसर पर (अहमदाबाद मंदिर) ता. १६-३-२०२१ : लालजी महाराजश्रीने बात कही उसके अनुसार अपने प्रत्येक उत्सव एक से एक बढकर है। हमारा उद्देश्य शुरु से ऐसा रहा है कि गाँव हमारी जीवन रेखा है। इससे कोई असहमत तो नही है । मैं इन संतो के साथ एक-एक हरिभक्तो के घर गया हूँ। प्रत्येक गाँव को न्याय मिलना चाहिए। यही उत्सव-समैया का मूल कारण हो सकता है। धार्मिक हरिभक्तो को महाराज उत्सव-समैया के लिये कह गये है। लेकिन पिछली सभा में हम बोले थे कि इस पर्व में सबका सहयोग चाहिए । हरिभक्त छोटा या बड़ा हो यह आप नही निश्चित कर सकते है । हमारी बुद्धि का दायरा कम है। कौन छोटा-बडा है। उसे भगवान निश्चित करते है।

अभी आप को ज्ञात हो या नहो आगामी उत्सव का क्या नाम रखे समझ में नही आ रहा था। बहुत मेहनत किये। पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा मंहत स्वामी कह रहे थे कि महाराज कुछ निश्चित नही कर रहे है। लेकिन हमे उस शब्द की खोज थी कि इस देव के समानान्तर कोई देव नही आये। दिमाग में एक सेकेन्ड में आ जाना चाहिए । अन्ततः गादीवालाने नाम दिया ''पर्व'' यही संक्षिप्त नाम पत्रिका में आप सब देख रहे है । थोडा सामाजिक दूरी रखिये। दूसरा लोक डाउन आ रहा है। सीरीयसली बोल रहा हूँ। हम अपना ध्यान नही रखेगे तो दूसरा कौन रखेगा। यह वास्तविकता है।

यह कागज (पर्व की पत्रिका) वेसिकली ओरीजिनल है। यह हमारे पास है। म्यूजियम में पी.पी. स्वामी, महंत स्वामी इत्यादि संतो तथा हितेन्द्रभाई आदि हरिभक्तो द्वारा परिश्रम करके श्रीमद् भगवत नंद संतो द्वारा हस्त लिखित पुरानी रामायण आदि ग्रन्थोका संशोधन कराया फिर मैने हितेन्द्रभाई से कहा मुझे धार्मिक न होकर वहीवटीय प्राचीन हस्तावेज हो तो मुझे थे। म्युजियम में से सत्य दस्तावेज मिला। जिसकी प्रिन्ट यह है। पर्व पत्रिका के पीछे जो बैक ग्राउन्ड है। उसमें मूल लिखावट है। जो आत्याधिक ऐतिहासिक है। यह किसी अन्य के पास नही है।

अपने जेतलपुर, मूली इत्यादि दूसरे मंदिरो में गंगा माँ, रामाभाई राजा की धर्मपत्नी बहनो का बडा योगदान रहा है। लेकिन अहमदाबाद मंदिर के इतिहास में मुझे रुचि इस लिये है कि हमे काम चलाउ या गलत काम नही करना है। मंदिर बना उससे पूर्व महाराज के कार्यो से प्रभावित होकर तत्कालीन इंडिया कम्पनी के पदाधिकारी और ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधियो दोनोने मिलकर महाराज से मिले और बोले कि अहमदाबाद में आप के पास कोई जगह है ? मठ है ? स्थान है ? महाराज अपने आश्रितो की उपासना शुद्दि बनी रहे। इस उद्देश्य से मंदिर का गूढ संकल्प तो या ही । महाराज के स्वभावानुसार उन्हे अपने साथ एक हाथ रुमाल का वजन भी नही रखते थे। मंदिर करने से आसक्ति जागृत होगी । सर्व प्रथम मंदिर के लिये मनाकर दिये । आधारानंद स्वामी के ग्रंथ में पढियेगा। महाराज कहते है

मंदिर तो है । यदि अधिक मंदिर बनाना हो तो नरनारायणदेव और शिक्षापत्री रखकर उसकी पूजा करे । हम सब को सोना-चाँदी अच्छी लगती है । महाराज बोले हमे स्वर्ण जरा भी अच्छा नही लगता है । भगवान जैसे हे वैसे हमे रखना चाहिये । यही हम सब को सिखना है।

ईस्ट इंडिया कम्पनीने अनुदान से महाराज ने मंदिर निर्माण के लिये जमीन तो स्वीकार कर लिये थे । लेकिन पदाधिकारीयो के पास से ९९ वर्ष तक जमीन को लीज पर दी गई थी । महाराज का रक्त तो मूलतः यु.पी. का था । वह विचार किये कि ९९ वर्ष के बाद कोई दूसरी सरकार आये और मंदिर गिरा दे । अब हमें जमीन दूसरे कार्य के लिये चाहिए । मंदिर कही तोडा जाता है । हमें ९९ वर्ष तक थोडे ही चलाना है । जो काम करे वह पूरा और पक्का करना चाहिए । नही तो नही करना चाहिए । महाराजने उनके सामने स्थायी दस्तावजे की बात किये । वह कागज पुनः ब्रिटेन गया । ब्रिटेन की रानी का सिक्का उस पर लगाया था । ताम्रलेख पर जब चन्द्र-सुरज है तब तक अधिकार प्रदान किया गया । यह वहीवट पत्र कइ मास पहले हमारे हाथ में आया है । 'पर्व' हेतु इसका बडा सहयोग है । उत्सव में इस पत्र को दिसप्ले करके सभी को दर्शन हेतु रखा जाये । यह एक ऐसा मंदिर है । जिसकी जमीन को महाराजने स्वयं स्वीकार किया था । किसी के आग्रह से नही किये थे । इससे यह सिखना है कि कार्य पूरा करे नही तो उसे छोड देना चाहिए । इस कागज में अंग्रेज अधिकारी का हस्ताक्षर है । **Signature** का महत्व है । **Sing** के उपर **Seal** लगी हुई है । ऐसा दस्तावेज आज किसी के पास नही है । जो अपने पास है । ५६ का सीना छोटा हो जाता है । आयोजन की रुपरेखा का सामान्य वर्णन पर बात हो चुकी है । इस लिये तैयार रहे । आप हमारे है इस लिये अधिकार से कह रहे है । छोटे छोटे हरिभक्त को न्याय मिलना चाहिए । एक झोपडी में जाने के लिये हमे संकोच नही करना चाहिए । यह महाराजकी अपनी परम्परा है । महाराज सगराम भक्त के पास गये थे । और राजा के यहाँ भी जाते थे । सभी लोग योगदान अवश्य दे । उत्सव में खर्च करने के बाद जो शेष बचत होती है । उसका उपयोग अवश्य होता है । रजत-स्वर्ण जयंती महोत्सव में जो बचत हुई थी । उसमें से छपैया के मुख्य मंदिर को संगमरमर से बनवाया गया । वर्तमान में छपैया को टूरिस्ट डिपार्टमेन्ट आफ इंडिया में रखा गया है । हमने नही रखवाया है । हमे लायबिलिटि नही रखना है । इस कारण से एक पथ्थर को बदलना होगा तो आदेश लेना पडता है । हमे अपना अधिकार है हम सब देख लेगे । सुविधा मिलना चाहिए । अभी करशनभाई के साथ आर्किटेक्टने आठ महने के अन्दर प्रथम छत बना दिये है । आप को पता है ? किसी से धन नही माँगा । जो दानपेटी में रखते है उसका हम लोग उपयोग करते है । उत्सव समैया से विशेष कार्य होता है । महाराज के बचन के हिसाब से उत्सव समैया मे सामर्थ छिपाना नही चाहिए । और शक्ति से अधिक करना भी नही चाहिए ।

लालजी महाराजश्रीने कहा कि उत्सव का लोगो महाराजश्रीने स्वयं बनाया है । इसके बाद भी बिना अहम के प.पू. महाराजश्रीने कहा नही – नही मैने नही बनाया है । वास्तव में हमारे पुराने मित्र माने, सत्संगी माने, प्रथम मानस होने के बाद ललाट पर तिलक शोभा देता है । नही तो खराब लगता है । मै और अमित खरसाणी बैठे आधे मिनट में कार्य पूरा हो गया । कुछ विचार, पद्धति, कानसोट संतो के पास से लिया गया था । उसको ध्यान में रखकर मेहनत करते है । ९९% पतिशत परिश्रम करना पडता है । १% भगवान का आशीर्वाद मिलता है । इस प्रकार १००% काम हो जाता है । ९९% प्रतिशत श्रम करना ही पडता है । खेत में विना सिचाई किये पैदावार मिले तो अच्छी ही है । पानी देने पर ही भगवान सहायता करते है । यह महाराज का वचन है । दिमाग में जब तक नही आये तब तक नही करते है । 'पर्व' बस पर्याप्त 'पर्व'.... पूर्ण पर्व से अधिक क्या है । यह 'पर्व' है ...... हम सब मिलकर 'पर्व' मनाये । 'पर्व' के आगे कोई विशेषण

नही होता है । विशेषण के आगे भी लोग विशेषण लगाते होगे । नरनारयण भगवान के आगे कोई दूसरा विशेषण रखना है । 'जयश्री स्वामिनारायण' किसी के कहने से होने वाला है ? किसी कि मृत्यु पर सामान्तः जय सियाराम, जयमाताजी यह सार्जनिक रुप से बोलते है । तब कोई **Good Morning** नही बोलता है । कोई उस समय 'जय स्वामिनारायण' कहते है । उसकी अलग ट्यून होती है । यह 'पर्व' अपने को मनाना है । आप के उपर बडी जिम्मेदारी है । संतो के साथ मै और लालजी महाराज तो है ही । ५०% ५०% मै और लालजी महाराज गांव लेने वाले है । पुराना लवारपुर गाँव मुझे याद है । अब तो बदल गया है । जब मिट्टी के मकान है । चूना की दिवाल थी । उपर नलिया था । हूक में पंखा लटकता था । टिकटिक आवाज करता था । लेकिन हृदय पर हाथ रख कर कहे कि गाँव की चारयाई में जो नींद आती थी । क्या आज ए.सी. के कमरे में आती है ? नही आती है । हमारे लिये कोई समस्या नही है । हमारे उपर भगवान की कृपा है । तुरंत नींद आ जाती है । ऐसी नींद कब आती है ? जब परम शांति और श्री नरनारायणदेव के उपर पूरा विश्वास होगा । दुनिया में कुछ हो लेकिन अपना सत्संग बढा है । सत्संग बढे और घटे... श्री नरनारायणदेव की मरजी अनुसार होता है । महाराज के बचन **Equivalent to Full Stop** है । पूर्ण विराम है । २१२ पूर्ण विराम है । अल्प विराम नही है । नही तो २१३ कोई कर देता । लेकिन कोई नही किया । उसकी शक्ति भी नही है । शिक्षापत्री शाश्वत है । और अनंतकाल तक स्थायी रहने वाला है ।

हम लोगो को ऐसे देव प्राप्त हुए है । उनकी बात हो सके ऐसा नही है । इन देव की महिमा वर्णन करे की हेसियत हमारी नही है । हम लोग उनके बच्चे है । आप हम लोगो पर कृपा रखे । मैं इस देव की कृपा पर जीता हूँ । सीनातान कर यदि चलता हूँ । इस देव की कृपा से ही सम्भव है । सिद्धान्त की कृपा से चलता हूँ । घर आप क्या करते है मुझे चिंता नही है । लेकिन सम्प्रदाय के लिये देव का सिद्धान्त लागू पडता है । इसमें कोई छूट-छाट नही है । चाहे सिर फूटे या दिवाल टूट जाये । दूसरी बात यह है कि जिस भी हरि मंदिरो या शिखरबद्ध मंदिरो का संचालन स्वतन्त्र रुप से चलता हो । कृपा करके १९१५ का ट्रस्ट एक्ट आफ लावुक पढियेगा । नही तो आने वाले दिन में समस्या होगी । अभी तक कई दोषोरोपण हो चुका है । इस लिये हम अधिक परिश्रम करना पडता है । **End of the day (Return)** हमे फाईल करना पडता है । सभी ! ट्रस्टी लोग यहाँ पर बैठे है । आथोराईज डीलर शेष देकर रायल्टी नही लेते है । उपर से हम देते है । ऐसी दुनिया कही नही मिलेगी । कल उठकर अपना मंदिर अपने बच्चो को खराब रास्ते पर न ले जाये । उसकी जिम्मेदारी अपनी है । आप अपने मकान का दस्तावेज दूसरे के नाम पर कर दिये हो ? कैसे सुरक्षित रखते है ? ३-४ बार ताला चेक करके तिजोरी में रखते है । आप का कागज क्लीयर हो । और देव का कागज क्लीयर न हो तो कैसे चला लेते हो ? कोई परेशानी आये तो हमारा सम्पर्क करे । अभी वसई-डांभला मंदिर का छोटा-बडा इस्यू आया था । हम पी.पी. स्वामी से बोले, हरिभक्तो को हमारे पास लेकर आ जाइये । पाँच मिनट में कार्य पूर्ण हो गया । हम देव के है तो देव के होने मे क्या समस्या है ? केवल बाते करना है ? कई लोग खराब-खराब बाते करते है सब कुछ देव का ही है । देव का है तो लाइये । लिखकर दे दीजिये । लोगो को गलत मार्ग पर क्यो ले जाते है । लेकिन याद रखना थैली में क्या लाये थे । और क्या ले जायेगे ? बात नही कर रहे है ? जहाँ पर भी नरनारायणदेव का मंदिर है, यदि वहाँ पर नरनारायणदेव की पट्टिका लगी है । वह **On Paper** वैधानिक रुप से देव का होना चाहिए । यहाँ कही पर तकलीफ आये । हमारे पास सीधे क्या काम है ? और क्या परिस्थिति है । उसे पूर्व सूचना देकर आये । क्योकि हम व्यवस्था करना पडता है । मैं निराश करके किसी को वापस नही करना चाहता हूँ । महाराजश्री

मिलते नही है ऐसा किसी से मत कहे । वास्तविकता लाल महाराज जानते है । जमीन के उपर बैठ कर छोटा या बडा है । मुझे कोई अवरोधनही है । हम समय का उपयोग करते है । मूली देश के मंदिरो के लिये यह विशेष लागू पडता है । जो राधाकृष्णदेव के होगे वे सच्चे अर्थ में राधाकृष्णदेव के ही रहेगे । जो देव के है । वे देव के हो के रहेगे । जो देव के नही वे हमारे नही है । देव का नही वह आचार्य का नही । आप को केवल देव का होना है । अर्थात् आचार्य आप के अपने आप हो जायेगे । क्योकि हम लोग देव के है । कई लोग कान ऊल्टे पकडते है । सीधे झूठ बोलते है । और कहते है कि 'आचार्य की आज्ञा है ।' वे आचार्य किसकी आज्ञा में रहते है । सीधे महाराज की आज्ञा में रहते है । देव की प्रणालिका बच्चे-बच्चियो को प्रदान करे । यह वंशावली में दीजियेगा । सिद्धान्त प्रदान करियेगा । समस्या यह है कि आप दो नाव में रहेगे तो यह ऐसा असम्भव है । हमें स्पष्ट है तो बच्चो कोन स्पष्ट ज्ञान दे सकते है । मैं कोइ ट्रेडिशनल भाषण नही दे रहा हूँ । देव के सानिध्य में बैठा हूँ । में सीधी बात कर रहा हूँ आप अवश्य सुने । देव का होकर रहने में आप की सुरक्षा है । रुपया सुरक्षा नही देती है । इससे सुविधा मिलती है । लेकिन सुविधा के पीछे मेइटीनेन्स रखना पडता है । गाडी का टायर भी बडा होता है । पंचर बडा अर्थात् खर्च अधिक । सायकिल में कम खर्च आता है ।

दूसरा दया करके शरीर स्वस्थ रखे । इसलिये धनश्याम महाराज के आगे जोडकर मैं दूरी बनाने के लिये कह रहा हूँ । आप एक साथ खडे रहे । मुझे क्या कष्ट है । महाराजकी आज्ञा है कि आपातकाल में अपनी तथा दूसरे की रक्षा हो ऐसा कार्य करना चाहिए । कुछ हो सके या नही हो सके । यह अपने लिये अवश्य पालन करे । अभी आराम का समय नही है । लालजी महाराज कहते है कि सर्व प्रथम अन्तःकरण बाद में शरीर की शुद्धिबाद में देव के सीढी पर चढे ।

देव है तो सब कुछ है । देव ने आचार्य बनाया है । यह पद गौरव का है । संतो और हरिभक्तो की प्रणाली भी महाराज ने स्थापित किया है । इससे ही इसकी महिमा है । कोई काल्पनिक संसार नही है । एक दूसरे की मर्यादा सुरक्षित रखे । यह अहमदाबाद देश है । यही परम शांति है । है की नही ? गर्व रखे । आनंद में रहे । विशेष **Under Line** (विशेष) संत लोग दूर-दूर से आये है । संत लोग पूजनीय है । महाराज कहते है । यह अक्षरधाम की सभा है । देखना है तो आप देख ले । दृष्टि होगी तो मानेगे । **Positivity** की आवश्यकता है । **Negation** विचार से नकारात्मकता ही जन्म लेगी । ये देव अधिक बलशाली है ? इनसे अधिक कोई नही है । कारण महाराज चबूतरे पर खडे रहकर बोले कि इसमें और हमारे में रंचमात्र अन्तर नही है । और गर्व से यह लाल पगडी उतरती है तो देव के चबूतरे पर ही । शे। किसी जगह पर नही निकलती है ।

हमे आप के उपर विश्वास है । कि आप हमारे है । इस लिये 'पर्व' की तैयारी करे । आप के लिये हम और लालजी महाराज आधी रात को खडे मिलेगे । काम-परिस्थिति के अनुसार समय देगे । प्रत्येक प्रकार से कार्य होगा । बहनो को भी महाराज ने समप्रदाय में सम्मान दिये है । उनको भी जगह है । हवेली में कोई प्रवेश नही कर सकता है ।

सभी को परम्परा सम्भालनी है । बेटा । (पाटोत्सव के यजमान श्री केवेटे की तरफ देखकर) आप को विशेष ध्यान देना है । **Not about Buisiness or Money but Athics** (व्यापार पैसे के लिये नही सिद्धान्त के लिये) **try confusion** प्रथम **Come to me** आपके बच्चे के बच्चे के चेहरे पर खुशी देखना है । इस सभा में वृद्ध आगे बैठे है । लेकिन 'पर्व' में आगे आप के बच्चो को देखना है । आप सभी का भला हो, कल्याण हो, सभी प्रकार से मंगल हो, ऐसी प्रार्थना आज महाराज के चरणो में करते है । 'पर्व' एक-एक घर तक पहुँचना चाहिए । इसलिये **Be Responsible.**

श्री स्वामिनारायण म्युज़ियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

कला की नव देवी को लैटिन में म्यूज कहते है। उन नव देवीयो का मंदिर अर्थात् म्यूजियम और गुजराती में म्युज का अर्थ मनन करना, ध्यान करना है। अपने म्यूजियम में होल नं. ८ में ध्यान करने योग्य वातावरण है। इसलिये हम अपने म्यूजियम को ध्यान मंदिर कह सकते है।

ऐसे दिव्य वातावरण वाला अपने इस म्युजियम का इस वर्ष १० वर्ष पूर्ण हुआ है। इसका दशवाँ वार्षिक स्थापना दिन मनाने के लिये सभी की उत्सुकता होती है। परंतु कोरोना काल की वर्तमान परिस्थिति में इस दिन १६ मार्च को म्यूजियम खुला था। यह संतोषप्रद बात है। प्रत्येक वर्ष की भाँति म्युजियम से सादगीपूर्वक कम व्यक्तियो के साथ दशवाँ स्थापना दिवस मनाने का कार्यक्रम निश्चित किया गया। मुख्य यजमान श्रीजनकभाई गोकलदास पटेल थे। तथा सहयजमान और शुभेच्छक २५० यजमानोने समूह महापूजा का लाभ लिये थे।

म्यूजियम में प्रवेश करते हुए अलग-अलग धातु के दस वर्ष से खाली बोर्ड पर प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से म्यूजियम के प्रत्येक होल में देखने योग्य महत्वपूर्ण सूची लगाई गई थी। समूह महापूजा के समापन के बाद भौतिक दूरी रखने के उद्देश्य से म्यूजियम के पिछले भाग में खुला मंडप बाँधकर सभा की गई थी। जिसमें प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किये। इसके बाद १२०० लोगोने भोजन प्रसाद ग्रहण किये थे। म्यूजियम के प्रांगण में १०० जितने सोलह लाईट, खम्बे पर लगायी गयी। इससे मुक्त की बिजली से म्यूजियम प्रकाशित रहे।

इस तरह समाज में लोग धनी का, गरीब का, धार्मिकता का, बुद्धिजीवी का अलग-अलग मास्क पहन कर धुमते है। म्यूजियम में सभी ने मास्क पहन रखा था। लेकिन इस मास्क के पीछे श्री नरनारायणदेव के प्रति सच्ची निष्ठा का चेहरा दिखाई दे रहा था।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में यज्ञ पूजन की सूची - मार्च-२०२१

दि. १८-०३-२०२१ सांख्ययोगी गंगाबा, कमलाबा तथा महिला मंडल - श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा - ह. सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा उषाबा - मोरबी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची - मार्च-२०२१

दि. ०५-०३-२०२१ अ.नि. जयंतीभाई साकलचंद (सुपर मार्बल) की छठ्ठी पुण्यतिथि के अवसर पर - ह. कांताबेन, मीताबेन, पार्थ, दिव्य, प्रियंका, उचित (विहारवाला)

दि. १३-०३-२०२१ गीताबेन नवीनभाई पोपटलाल ठक्कर - पालडी

दि. १४-०३-२०२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग समाज - हिंमतनगर - प्रेरक महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदाजी

दि. १६-०३-२०२१ म्यूजियम के दशवे (१०) स्थापना दिवस पर यजमानश्री जनककुमार गोकलदास पटेल परिवार (लवारपुरवाला)

दि. ३१-०३-२०२१ केयाबेन विपुलकुमार (नेत्रामणी) हिंमतनगर - ह. डॉ. हरिकृष्णभाई पटेल - सापावाडा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि- मार्च-२०२१

रु. १,००,१००/- श्री डाह्याभाई नारणदास पटेल - माणसावाले - वर्तमान अहमदाबाद - ह. पी.पी स्वामी सेक्टर-२ गांधीनगर

रु. १,००,०००/- श्री विठ्ठलभाई शिवरामदास पटेल - रिद्रोलवाले

रु. ५०,०००/- अ.नि. बाबुलाल मणीलाल शाह परिवार (प्रांतिजवाले) - ह. संयुक्ताबेन शरदभाई - अहमदाबाद

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "भगवान के साथ जैसा चाहिए ऐसा लगाव क्यो नहि होता ?"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

'भग' अर्थात् ऐश्वर्य और 'वान' अर्थात् युक्त, ऐश्वर्य से युक्त अर्थात् 'भगवान' छ प्रकार के ऐश्वर्य होते है । वह भगवान में अनंत मात्रा में रहता है । 'ज्ञान' 'विरता' 'श्री' अर्थात् लक्ष्मी 'यश' 'सौन्दर्य', 'वैराग्य' अनंत अर्थात् असीम मात्रा में होता है । जिसकी कोई सीमा नही होती है । इतना होते हुए भी आसक्ति नही मात्र सम्पूर्ण वैराग्य है । वे अपने गुणो से भी बंधी नही है । वह सम्पूर्ण वितराग है । इशलिये भगवान बड़े है । हम उस कारण से उनके पास जा नहि सकते है । इस लिये हम भगवान के पास नही जा पाते है । उस लिये भगवान के प्रति उतना प्रेम नही बन पाता है । हमे डर नही उनके ऐश्वर्यो का ताप लगता है । क्योकि ? हममे वह गुण नही है ।

जिस प्रकार सूर्य प्रकाश देते है । वह हमें अच्छा लगता है । लेकिन उसके समीप नही जा सकते है । क्योकि असह्य गर्मी लगती है । अधिक पास जाने पर जल जायेगे । क्यो ? बिना योग्यता के अधिक प्राप्ति पर कष्ट मिलता है । भगवान के समीप जाने के लिये क्या करना चाहिए ? हमे उस तरह के गुण रखना चाहिए । सखा भाव रखकर भक्ति करनी चाहिए । यह सर्वोतम मार्ग है । जैसे देश के राष्ट्रपति से मिलने के लिये कई क्रमो को पार करना पडता है । कुछ लोगो को समय लेना पडता है । यदि आप उनके मित्र है तो फोन करके शीघ्र मिल सकते है । वह भी दस या पाँच मिनट के लिये मिल सकते है । आपकी मित्रता होने पर आप का काम शीघ्रता से हो जाता है । भगवान के विराट स्वरुप को भूलकर अपना मित्रवत भाव अपनाना चाहिए । इसका अर्थ यह नही की भगवान की मर्यादा न रखे । भगवान सभी के है । इस तरह का भाव रखना चाहिए । अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति है । ये हमारे भी है । हमारा भी पूर्ण अधिकार है । क्योकि ? हम उनके है ।

जिस प्रकार राजा की सवारी निकलने पर प्रजागण राजा का दूर से दर्शन करता है । कि ये हमारे देश के राजा है । मैं उनके राज्य में निवास करता हूँ । राजा के सेवक होते है । ये राजा को प्रजा से अधिक पहचानते है । क्योकि ? ये उनकी आज्ञा का पालन और सेवा करते है । मित्र आपस में एक दूसरे के स्वभाव को अधिक जानते है । दोनो के बीच प्रेम का भाव भी होता है । राजा का पुत्र राजा के गोद में खेलता है । दूसरे कि हिम्मत नही होगी । राजा के गोद में खेलने के लिये उनके घर में जन्म लेना होगा । इसके अलावा राजा दूसरे को गोद में ले तो उसकी इच्छा है । राजा एक ही है । लेकिन सभी के साथ सम्बन्धअलग-अलग है । उसी प्रकार भगवान भी एक ही है । लेकिन भक्त भगवान के प्रति अलग-अलग लगाव रखते है । प्रेम युक्त सम्बन्धसबसे अच्छा होता है । भगवान के साथ सखा भाव रखने पर भगवान के नजदीक जाते है । महा भारत के युद्ध में अर्जुन भगवान के सखा थे । भगवान सहज रुप से उनके 'सारथी' बने थे । लेकिन जब भगवान विराट रुप में आये तो अर्जुन घबरा गये थे । अर्जुन गांडीवधारी थे । फिर भी प्रभु से बोले आप पहले जैसी अवस्था में आ जाये । सखा भाव स्वरुप में आइये । तो

भगवान का दो स्वरुप है । एक विराट स्वरुप और दूसरा मधुर स्वरुप है । यदि भगवान अपने ऐश्वर्य युक्त विराट स्वरुप में दर्शन दे तो उनके समीप नही जाना चाहिए । भगवान अपनी शक्ति छिपाकर दर्शन देते है । इस लिये भगवान के विराट रुप को भूल जाना चाहिए । और अपना समझकर भक्ति करना चाहिए । क्योकि ? हम अज्ञान से अपूर्ण है । भगवान की प्रत्येक जीव के उपर कितनी 'करुणा' है । उसे हम जान नही सकते है । अपना अपना भाव रखेगे तो हमे सरलता से आगे बढ जायेगे । जैसे एक उच्च अधिकारी के माँ भाव उस अधिकारी के प्रतिवेटे जैसा ही होता है । वह माँ के सामने पुत्र ही होता है । बाद में वह अधिकारी के रुप में विचार करेगी । जहाँ पर अपनापन होता है । वहाँ पर बुद्धि नही वहा पर प्रेम का भाव होता है । भगवान के प्रति प्रेम का भाव रखे । क्योकि 'प्रेम' अर्थात् शरणागति स्वीकार कर लेना है । प्रेम में १००% शरणागति हो जाती है । आप अपने परिवार को प्रेम करते है । आप अपने बच्चे और पति को अधिक प्रेम करते है । हम ऐसा प्रेम भगवान के प्रति क्यो नही रख सकते है ? लेकिन इतना अवश्य ध्यान रखे कि भगवान से पूर्ण प्रेम प्राप्त करना हो तो पूरी शुध्दता होनी चाहिए । हमारा अन्तःकरण शद्ध होना चाहिए । आप का बच्चा गंदा हो, मिट्टी युक्त हाथ-पैर हो तो उसे पहले स्वच्छ कर देते है । इसके बाद उसे गोद में लेते है । परमात्मा के साथ प्रेम करने के लिये सर्व प्रथम अपना स्वीकार करना पडता है । प्रेम में स्वयं शरणागति आ ही जाती है । जहाँ पर प्रेम होता है । वहाँ पर दूसरी वस्तु की आवश्यकता नही पडती है ।

अर्जुन को भगवानने जो ज्ञान दिया । उस में प्रारम्भ से अंततक शंका बनी रही । अन्ततः भगवानने अठ्ठारवे अध्याय में ६४ श्लोक में बोले कि मित्र के रुप में रहस्य की बात बता रहा हूँ । तुम सुनो, तुम अपना 'मन' और 'बुद्धि' मुझे अर्पण कर दो । तो १००% शरणागति आ जायेगी ।

इस लिये हमें भी सम्पूर्ण शरणागति स्वीकार करके भगवान की भक्ति में लग जाना चाहिए । भक्ति की पूर्णाहुति कभी नही होती है । कर्म का फल मिल जाने से कार्य पूरा हो जाता है । ज्ञान का क्या कार्य है । यह अज्ञान को मिटा देता है । अर्थात् ज्ञान का कार्य पूर्ण हो जाता है । लेकिन 'भक्ति कभी हमारा साथ नही छोडती है । हमें परमात्मा को प्राप्त करने के लिये भक्ति करना चाहिए । और भक्ति भाव भक्ति में बदलती है । बाद में प्रेम भक्ति में बदलता है । इसके पश्चात भगवत प्राप्ति होती है ।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

BANK DETAILS FOR ONLINE / CHEQUE DONATION PURPOSE

STATE BANK OF INDIA
NAVRANGPURA BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 62303101798
IFSC : SBIN0003096
MICR CODE : 380 002 029

INDIAN BANK
G S HIGH WAY BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 50379847476
IFSC : IDIB000G523
MICR CODE : 380 019 038

BANK OF INDIA
RELIEF ROAD BRANCH, AHMEDABAD
BENEFICIARY NAME - SHREE SWAMI NARAYAN MANDIR TRUST
A/C. NO. 20131010002 7259
IFSC : BKID0002013
MICR CODE : 380 013 027

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव का १९९ वाँ पाटोत्सव

सर्वावतारी सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवाने आज से १९९ वर्ष पहले महामंदिर का निर्माण करके के संकल्प स्वरुप सम्प्रदाय में सर्व प्रथम अंग्रेज सरकार के अति आग्रह से जब तक चन्द्र और सूरज और ब्रह्मांड की अवधिरहे । तब तक भूमि का अधिकार ताम्रपत्र पर लिखवाकर श्रीहरि के आज्ञानुसार स.गु. आनंदानंद स्वामीने शिल्प स्थापत्य युक्त गगनचुंबी महामंदिर का निर्माण कराके संवत १८७८ के फाल्गुन सुद-३ को सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायणने स्वस्वरुप श्री नरनारायणदेव को स्थापित किये थे । इस महाप्रतापी देव का १९९ वाँ पाटोत्सव महोत्सव फाल्गुन सुद-३ ता. १६-३-२०२१ मंगलवार को विधिवत पूर्ण हुआ । ता. १३-३-२०२१ से ता. १५-३-२०२१ तक त्रिदिवसीय महाविष्णुयज्ञ श्रीहरियज्ञ विद्वान पंडितो द्वारा यजमान परिवार बैठकर प्रातः ७ से शायं ५ बजे तक अलौकिक लाभ लिये थे ।

फाल्गुन सुद-३ प्रातः ५ बजे से ६-३० बजे तक ठाकुरजी की पूजा-अर्चना तथा ६-३० से ७-०० तक परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का षोडशोपचार महाभिषेक श्रीहरि के तीन अपर स्वरुप का करकमलो द्वारा वेदोक्त विधिसे पूर्ण हुआ । इसके बाद प्रसंगोचित सभा में पाटोत्सव के यजमान अ.नि. गोकलदास शामलभाई पटेल परिवार लवारपुरवाले वर्तमान में अहमदाबाद प.भ. किरीटकुमार गोकलदास पटेल, प.भ. रजनीकुमार गोकलदास पटेल, प.भ. जनककुमार गोकलदास पटेल, ह. जय किरीटीकुमार पटेल, हार्दिक रजनीकांत पटेल, पार्थ जनककुमार पटेल, उत्कर्ष रसिकलाल पटेल आदि सभीने धर्मवंशी की आरती उतारकर भेट प्रदान करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव की आगामी २०० वाँ पाटोत्सव ''पर्व'' की आयोजन पत्रिका सभी संतो-हरिभक्तो के सामने खोले थे । और जिसकी तैयारी के लिये सभी संत-हरिभक्तो को कंधे से कंधा मिलाकर गाँव-गाँव में उत्सव की तैयारी में लग जाने का आवाहन किये थे ।

प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के ''पर्व'' उत्सव में सभी लाभ ले । तथा सभी प्रकार की सेवा में भाग ले आज्ञा दिये थे।

अंत में पूज्य महंत स.गु. शास्त्री स्वामीश्री निर्गुणदासजीने सभी को ''पर्व'' की विस्तृत सूचना दिये थे । सभी को आयोजन पत्रिका का वितरण किये थे । सभी ने अन्नकूट आरती का दर्शन करके प्रसाद लेकर लोग धन्य हुए । (पू. महंत स्वामी के प्रतिनिधिद्वारा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर भूडिया का वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से धमरपुर (भूडिया) श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान ठाकुरजी की तिसरा वार्षिक पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया था ।

जिस के अर्न्तगत ठाकुरजी की महापूजा और अन्नकूट सुंदर रुप से किया गया । इस अवसर पर पू. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) उनका मंडल संत घनश्यामप्रकाश स्वामी, घनश्यामस्वरुप स्वामी, हरिप्रकाश स्वामी (कालुपुर) आदि संतोने कथा-वार्ता का लाभ दिये थे ।(घनश्यामसिंह राणा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल का २१ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल में बिरामजान श्रीहरि का २१ वाँ पाटोत्सव विधिवत मनाया गया था ।

इस अवसर पर स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी, सगु. स्वा. रामकृष्णदासजी (कथा किये) और स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी आदि संत मंडल आकर आशीर्वाद दिये थे । ठाकुरजी का अभिषेक और अन्नकूट अच्छे रुप से मनाया गया था ।(अनिलभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से स.गु. स्वामी वासुदेवचरणदासजी (दिवडा कोलोनी) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) में बिराजमान श्री ठाकुरजी का पाटोत्सव माधवद-८ के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया था ।

पाटोत्सव के अर्न्तगत समूह पूजा रखी गयी थी । जिस में ५७ जितने हरिभक्तोने लाभ लिया था । इस पाटोत्सव असवर के यजमान प.भ. बलवंतसिंह एम. डाभी, अन्नकूट के यजमान प.भ. मनुजी गोविंद डाभी और संत पूजन के यजमान प.भ. पृथ्वीसिंह पूंजाजी डाभी के परिवार के लाभ लिया था । इस अवसर पर पू. वासुदेव स्वामी और अहमदाबाद से आये संतोने ठाकुरजी का

अभिषेक करके कथा तथा अन्नकूट की आरती उतारे थे । तथा सभी को आशीर्वाद प्रदान किये ।(कोठारीश्री डांगरवा वांटो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा का १३ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा में बिरामजान ठाकुरजी का १३ वाँ पाटोत्सव विधिवत मनाया गया था ।

गांधीनगर से-२ के पू. महंत पी.पी. स्वामी के मार्ग दर्शन-प्रेरणा से संत मंडल द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आरती और स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी द्वारा कथा-वार्ता का सभी को रसपान कराया गया था । इस अवसर पर स्वामी निलकंठचरणदाजी (मूली) आदि संत आये थे । (देवप्रकाश स्वामी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ का २४ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ का २४ वाँ पाटोत्सव सुंदर रुप से मनाया गया था ।

इस अवसर पर होमात्मक महापूजा स्वामी कुंजविहारीदासजी द्वारा की गई थी । तीर्थो से आये संतो में स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी, महंत स्वामी प्राणजीवनदासजी, स्वा. निलकंठचरणदासजी, घनश्यामजीवन स्वामी, धर्मकिशोरदासजी, देव स्वामी, महेन्द्र भगत और शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी आदिने प्रेरणादयक प्रवचन दिये थे । पी.पी. स्वामीने २५ वे पाटोत्सव को धामधुम से मनाया । संतो द्वारा ठाकरुजी का अभिषेक और अन्नकूट किया गया था ।(मिहिर कनुभाई पटेल - माधवगढ)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बिजापुर मासिक सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से एवम् स.गु. महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर विजापुर में प्रत्येक पूर्णिमा को सत्संग सभा का आयोजन होता है । ता. २७-२-२१ को आयोजित पूर्णिमा की सभा में शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर), स.गु. सा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) निलकंठ स्वामी (मूली) और पूजारी स्वामी कुंजविहारीदाजीने सभी हरिभक्तो को कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । आनेवाली सभा फाल्गुन सुद-१५ को होगी । (स्वा. देवप्रकाशदासजी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुरा (बोरिंगवाले) भाई-बहन प्रथम पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुरा (बोरिंगवाले) (भाई-बहेनोका) के पहले पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट और शा. स्वामी रामकृष्णदासजी द्वारा की गयी थी । तीर्थो से आये संतो ने आकर लाभ लिया था ।(कोठारीश्री मणीपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वरसोडा सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वरसोडा की मासिक सत्संग सभा के अन्तर्गत ता. २७-२-२१ को मासिक सभा का प्रबन्धकिया गया था । जिसमें घनश्यामस्वरुप स्वामी, निलकंठचरण आदि संत-हरिभक्तोने कथा का अमृतपान कराये थे ।(मूलराजसिंह चावडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा का ३९ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से कोठारी परिवार यजमान पद पर गवाडा मंदिर में बिरामजान ठाकुरजी का ३९ वाँ पाटोत्सव अच्छे रुप से मनाया था । ठाकुरजी के सामने भव्य अन्नकूट लगाया गया था । स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णधासजीने पूरी सभा को कथामृत का पान कराया था । पी.पी .स्वामीने सभी को आशीर्वाद दिये थे । सभा का संचालन स.गु. महंत स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट) ने शोभा बढाया था । अन्य संतो में गांधीनगर मंदिर से देवप्रकाश स्वामी और घनश्यामस्वरुप स्वामी आये थे । (मणीभाई पटेल - गवाडा)

सत्संग सभा कोटेश्वर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से कोटेश्वर गाँव में स्थित प्रसादीभूत ऐसा महामुक्त जवेर भगत के घर में प्रतिमास दूसरे शनिवार को सत्संग सभा मनाई जाती है । जिसमें १३-३-२१ के दिन स्वामी निलकंठचरणदासजी (मूली)ने सुंदर कथा का लाभ दिये थे ।(स्वा. देवप्रकाशदासजी - गांधीनगर)

मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर का ३१ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा मार्गदर्शन से मोटेरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान ठाकुजी का ३१ वाँ पाटोत्सव ता. १८-२-२१ को विधिवत मनाया गया था ।

इस अवसर के उपलक्ष्य में ता. १३-३-२१ से १७-३-२१ तक श्री घीरजाख्यान ग्रंथ की पंचदिनात्मक पारायण प.भ.

अमितभाई गोविंदभाई प्रजापति के यजमान पद पर और स.गु. शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी (एप्रोच) स.गु. स्वामी निलकंठचरणधासजी (मूली) और स.गु.शा. स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्ता पद से हुई थी। इस अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आदि मनाया गया था। तीर्थो से आये संतो में गांधीनगर मंदिर से महंतश्री पी.पी. स्वामी, शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोटा), स्वामी गोपालजीवनदासजी (प्रांतीज), व्रजवल्लभ स्वामी, हरिचरण स्वामी, आदि संत आये थे। सभा का संचालन स्वामी देवप्रकाशदासजीने सम्भाला था। आगामी श्री नरनारायणदेव २०० पाटोत्सव ''पर्व'' की आयोजन पत्रिका सबको देकर संज्ञामित किया गया। यह सूचना स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजीने दिया था। (कोठारीश्री मोटेरा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाणशीणा का ५ वाँ पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली मंदिर के पूर्व महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से पाणशीला श्री स्वामिनारायण मंदिर का ५ वाँ पाटोत्सव मनाया गया था। सर्व प्रथम संतो द्वारा ठाकुरजी का अभिषेक और अन्नकूट की आरती की गयी थी। मूली और सुरेन्द्रनगर आदि धामो से आये संतोने लाभ दिया था। मोरबी से सांख्ययोगी बाई भी आई थी। (कोठारी ईश्वरभाई)

कीडी श्री स्वामिनारायण मंदिर का तीसरा पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से कीड़ी गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर का तिसरा पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गाय था।

ता. १९-३-२१ के दिन ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आदि का दर्शन करके हरिभक्त खुश हुए थे। (मित बिपीनभाई पाठक - कीडी)

अहमदाबाद देश के गाँवो में श्री नरनारायण भगवान के २०० वें पाटोत्सव 'पर्व' के लिये नियुक्त किये गये संत

श्री नरनारायणदेव के २०० वें पर्व महोत्सव के उपलक्ष्य में आपके गाँवो में इन संतो की नियुक्ति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आज्ञा दिया है। कि ये सभी संत आप के गाँव में आये तब उनकी सभा तथा अन्य कार्यक्रम में आप सभी सहभागी अपश्य बने।

क्रम	देश का नाम	जिम्मेदार संत
१	बालवा	शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी
२	पोर वावोल	शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी
३	सादरा	शास्त्री स्वामी गोलोकविहारीदासजी
४	कणभा	शास्त्री स्वामी हरिॐप्रकाशदासजी
५	आंतरोली	शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी
६	कपडवंज	स्वामी घनश्यामस्वरुपदासजी
७	बालासिनोर	स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी
८	लुणावाडा	ब्रह्मचारी स्वामी हरिस्वरुपानंदजी
९	अम. शहर	शास्त्री पी.पी. स्वामी (छोटे)
१०	भात	महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
११	साणंद	स्वामी ध्यानप्रियदासजी
१२	नलकाँठा	स्वामी ध्यानप्रियदासजी
१३	खाखरिया	शास्त्री स्वामी आनंदप्रियदासजी
१४	विरमगाम	शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी
१५	ट्रेन्ट सीतापुर	शास्त्री पी.पी. स्वामी (जेतलपुर)
१६	कटोसण	शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी
१७	कडी राजपुर	शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी
१८	शिरोही (राज.)	शास्त्री स्वामी गुरुप्रसाददासजी
१९	ऊँझा	शास्त्री स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी
२०	विसनगर	शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी
२१	लाँधणज	शास्त्री स्वामी छपैयाप्रसाददासजी
२२	डांगरवा	शास्त्री स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी
२३	विहार	शास्त्री पी.पी. स्वामी (नाना), शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी
२४	मोखासण	शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी
२५	धमासणा	शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी
२६	प्रांतिज	शास्त्री स्वामी गोपालजीवनदासजी
२७	संतरामपुर	शास्त्री स्वामी विश्वस्वरुपदासजी
२८	बनासकांठा	शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी
२९	जेतलपलुर	शास्त्री के.पी. स्वामी
३०	धोलका	शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी
३१	ईडर	शास्त्री स्वामी सिध्धेश्वरदासजी
३२	माणास	शास्त्री स्वामी धर्मकिशोरदासजी
३३	सिध्धपुर	शास्त्री स्वामी विष्णुप्रसाददासजी
३४	वाली	स्वामी देवप्रसाददासजी
३५	मेहसाणा	शास्त्री स्वामी नारायणप्रसाददासजी
३६	कलोल	शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी
३७	हिंमतनगर	शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

तिथी	रसोई देनेवाले	गाँव
माधसुद-१	चौधरी निकुलभाई डाह्याभाई (मोहनथाल)	बालवा
माधसुद-१	पटेल छोटाभाई डाह्याभाई (मगस)	झूंडाल
माधसुद-१	हिराणी अमरबाई करशनभाई (चुर्मा के लड्डु)	गोडपर-कच्छ
माधसुद-१	भलाणी पोपटभाई अंबाभाई (मोतीचूर लड्डू)	सुरत
माधसुद-१	भावसार शैलेषभाई (शाकोत्सव)	अहमदाबाद
माधसुद-१	खेताणी शिवजी रुडाभाई (चुर्मा के लड्डु)	गोडपर-कच्छ
माधसुद-३	पटेल शशिकांत शंकरभाई (चुर्मा के लड्डु)	अहमदाबाद
माधसुद-३	अ.नि. प्रहलादभाई शंकरलाल (मालपूवा)	अहमदाबाद
माधसुद-३	श्री माधव टेक्सटाईल (मोहनथाल)	निकोल
माधसुद-३	पटेल सुखाभाई डी. (मोहनथाल)	गांधीनगर
माधसुद-३	पटेल जयंतीभाई केशवलाल (चुर्मा के लड्डु)	डांगरवा
माधसुद-३	सावलिया कांतिभाई नानजीभाई (मगस)	सुरत
माधसुद-४	महेता कैलासबेन अरविंदभाई (मगस)	अहमदाबाद
माधसुद-४	पटेल प्रकाश भानुभाई (मगस)	अहमदाबाद
माधसुद-४	पटेल सौरभ भास्करभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
माधसुद-५	अ.नि. स.गु.ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी की वार्षिक तिथि के अवसर पर (मोहनथाल) चारु मतीबेन गीरीश पटेल (अहमदाबाद)	कालुपुर मंदिर
माधसुद-५	पटेल नटवरभाई हरजीवनदास (मोहनथाल)	सोजा
माधसुद-५	अ.नि. गौरीबा तथा अ.नि. लालजीभाई भगवानभी पटेल (मगस)	देवपुरा
माधसुद-५	नवदुर्गा परिवार (मगस)	कारीयाणा
माधसुद-५	हरिकृष्ण कल्पेशभाई (बासुंदी पूरी)	अहमदाबाद
माधसुद-५	अ.नि.ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी की तिथी उनके शिष्य ब्रह्मचारी मंडल (बासुंदीपुरी)	कालुपुर मंदिर
माधसुद-५	अ.नि. हिरबाई मनजी हालाई (बूंदी)	मेघपर-कच्छ
माधसुद-५	हसमुखभाई तथा अरविंदभाई (मोहनथाल)	कोटा
माधसुद-६	अ.नि. लालजीभाी कल्याण वेकरिया (चुर्मा के लड्डू)	नारायणपर-कच्छ
माधसुद-६	पटेल उर्मिलाबेन भरतकुमार (काजुबदाम मैसुब)	मुंबई
माधसुद-६	पटेल रसिकभाई मगनभाई (मोहनथाल)	धरमपुर
माधसुद-७	चौहान गणेशभाई नारायणभाई (चुर्मा के लड्डु)	हलवद
माधसुद-७	अ.नि. लक्ष्मण लालजी वाघजीयाणी (मगस)	सुखपर-कच्छ
माधसुद-८	पटेल जयंतीलाल बालजीभाई रमेशभाई (दूधपाक पुरी)	गवाडा
माधसुद-८	अ.नि. कुरजी कल्याणभाई वरसाणी (मोहनथाल)	सुखपर-कच्छ
माधसुद-९	काछडिया प्रफुलकुमार विरजीभाई (मगस)	अहमदाबाद
माधसुद-९	पटेल नटवरलाल रणछोडलाल (मगस)	चाँदखेडा
माधसुद-९	पटेल शर्विल दिनेशकुमार (मोहनथाल)	करजीसण
माधसुद-९	अ.नि. मनुभाई चुनीभाई (मगस)	अहमदाबाद
माधसुद-९	अ.नि. स.गु. शा. स्व. लक्ष्मीप्रसाददाजी (साटा)	वडताल
माधसुद-९	श्रीहरि टैक्स - केराई लालजीभाई नानजीभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
माधसुद-९	गजेरा मनसुखभाई जेरामभाई (मोहनथाल)	निकोल
माधसुद-१०	अ.नि. पानबाई रवजी खीमाणी (मगस)	दहीसरा-कच्छ
माधसुद-१२	सां.यो. धनबाई खिवजी भंडेरी (मगस)	मिरजापुर-कच्छ
माधसुद-१२	पटेल रेखाबेन (मगस)	अहमदाबाद
माधसुद-१२	थलोतरा विनोदकुमार जे. (मगस)	अमहादाबद
माधसुद-१२	अ.नि. हरिन बिपीनभाई (बूँदी के लड्डु)	सुरत
माधसुद-१२	अ.नि.ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी ब्रह्मचारी शिष्य मंडल (मोहनथाल)	कालुपुर मंदिर
माधसुद-१४	अ.नि. पटेल सीताबेन नारणभाई (चुर्मा के लड्डू)	मेघपर-कच्छ
माधवद-१	पटेल निमलभाई लवजीभाई (चुर्मा के लड्डु)	अहमदाबाद
माधवद-१	भावसार हरेशभाई कांतिलाल (मोहनथाल)	अहमदाबाद
माधवद-१	पटेल ध्रुव तुषारभाई (मोहनथाल)	गांधीनगर

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

माधवद-२/३	पटेल रजनीकांत पुरुषोत्तमभाई (चुर्मा के लड्डु)	अहमदाबाद
माधवद-२/३	पटेल प्रकाशभाई भूलाभाई (चुर्मा के लड्डू)	धमासणा
माधवद-२/३	पटेल गुबेन सोमदास (मोहनथाल)	वडु
माधवद-२/३	मकराणी लालजीभाई वशरामभाई (चुर्मा के लड्डू)	जुनागढ
माधवद-२/३	पटेल चंद्रिकाबेन हरकांतभाई (चुर्मा के लड्डू)	अहमदाबाद
माधवद-२/३	पटेल धर्मकुमार विदेशभाई (चूर्मा के लड्डू)	
माधवद-४	पटेल जयकुमरा हरेशभाई (शिखंडपुरी)	वडताल
माधवद-५	चिनारायण जे. के. (बूंदी के लड्डु)	नखत्राणा-कच्छ
माधवद-५	पटेल सविताबेन रमणलाल (मोंहनथाल)	अहमदाबाद
माधवद-६	अ.नि. भरतभाई वनमाळीभाई (मोहनथाल)	सुरत
माधवद-६	अ.नि. टींडारिया कांताबेन करशनभाई (चुर्मा के लड्डू)	
माधवद-६	अ.नि. शाह निलाबेन हरिकृष्णभाई (चुर्मा के लड्डू)	अहमदाबाद
माधवद-६	गज्जर विनयभाई वासलुदेवभाई (बूंदी के लड्डू)	अहमदाबाद
माधवद-६	पटेल भरतभाई नटवरलाल (मोहनथाल)	अहमदाबाद
माधवद-६	पटेल बाबुभाई ईश्वरदास (चुर्मा के लड्डु)	मारुसणा
माधवद-७	अ.नि. केराई करशन देवजी (चुर्मा के लड्डू)	गोडपर-कच्छ
माधवद-७	अ.नि. केराई कल्याण लखमण (साटा)	रामपर-कच्छ
माधवद-७	अ.नि. विठाणी भरतभाई वनमाली भाई (मोहनथला)	रामपरा
माधवद-८	पटेल भाईलालभाई भगवानभाई (मगस)	गोठिब
माधवद-८	अ.नि. सांख्ययोगीबाश्री कानबाईबेन (बुंदी के लड्डू)	गढपुर
माधवद-९	अ.नि. सोनी घनश्यामभाई चंदुलाल (मोहनथाल)	अहमदाबाद
माधवद-९	श्री नरनारायणदेव के खुशी हेतु (मोहनथाल)	चाँदखेडा
माधवद-९	परमार पांचाभाई धनजीभाई (मोहनतळा)	गोडका
माधवद-९	पटेल मितुलभाई दिनेशभाई (काजूबदाम मैसुब)	भात
माधवद-९	पटेल हर्षदभाई प्रभुभाई (बूंदी के लड्डु)	अहमदाबाद
माधवद-९	मिस्त्री रमाकांतभाई मनहरभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
माधवद-९	पटेल अंबालालभाई ओधवजीभाई (मगस)	मेडा
माधवद-९	परमार सविताबेन भगवानजीभाई (मगस)	गोडका
माधवद-१०	केराई भीमजी हरजी (बूंदी)	रामपर-कच्छ
माधवद-१०	अ.नि. पटेल शकरीबेन विरमभाई (मोहनथाल)	रडोदरा
माधवद-१०	राबडिया केशरबाई मेघजी (बुंदी)	सरली-कच्छ
माधवद-१२	अ.नि. स.गु. स्वामी कृष्णस्वरुपदाजी (साटा जलेबी)	कालुपुर मंदिर
माधवद-१२	पटेल चंद्रिकाबेन विष्णुभाई (मोहनथाल)	अहमदाबाद
माधवद-१२	भावसार भाग्येश राजेशभाई (मोहनथाल)	अहमदावाद
माधवद-१२	राबडिया केशरबाई मेघजी (मोहनथला)	सरली-कच्छ
माधवद-१४	टींबाणा रामजीभाई - मारडिया भनुभाई (मोहनथाल)	सजको
माधवद-१४	अ.नि. हिराणी केशरबाई लालजी जादवा (मोहनथाल)	मानकुवा-कच्छ
माधवद-१४	पटेल मोनालीबेन विपुलभाई (मोहनथाल)	नेत्रामणी
माधवद-३०	अ.नि. पटेल शकरीबेन भोलाभाई (मगस)	अहमदाबाद
माधवद-३०	पटेल क्रिश्नकुमार वाडीलाल (ड्राईफ्रुट हलवा)	गोठिब
माधवद-३०	पटेल ललिताबेन पुरुषोत्तमदास (मगस)	चाँदखेडा
माधवद-३०	अ.नि. पाटडिया दिनेशचंद्र रणछोडलाल (गुलाब जामुन)	अहमदाबाद
माधवद-३०	प्रार्थना महिला मंडल (मोहनथाल)	बापुनगर
माधवद-३०	पाटोत्सव के अवसर पर (गुलाब जामुन)	

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम को भी १० वर्ष पूर्ण होने पर म्युझियम में समूह महापूजा के बाद सोशीयल डिस्टन्ट सहित सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री।

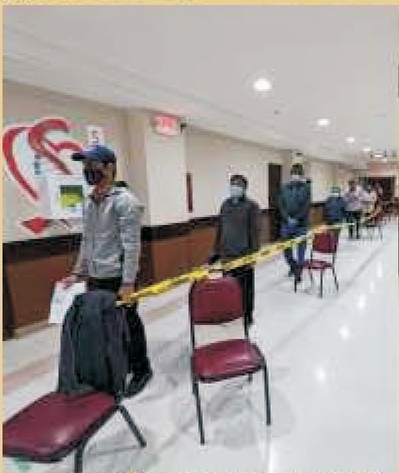

अपने शिकागो (अमेरिका) मंदिर में कोरोना का टीकाकरण ५८० डोज २९ मार्च को मंदीरो को मुफ्त में लगाया गया। उस अवसर पर अपने सत्संगी स्वयं सेवकोने सुंदर सेवा दिये और अच्छे प्रबन्ध किये थे।

जयपुर (राजस्थान) में अहमदाबाद से जाने पर हाईवे पर यात्रिको के लिये नव निर्मित यात्री भवन का सूचित प्लान।

जेतलपुर मंदिर में निर्माणाधीन भोजनालय का सूचित प्लान।

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में बिराजमान

श्री नरनारायण भगवान का २०० वर्ष

पर्व

२७ फरवरी से ५ मार्च २०२२

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 * Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023 Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये ऑनलाईन डोनेशन कालुपुर मंदिर की ऑफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है।

http://www.swaminarayan.in/donation

Praful Kharsani